CLASS- 11
SUBJECT- SECOND LANG. (HINDI)
POEM 1 : साखी
-कबीर दास

कवि परिचय : कबीर दास हिंदी की संत काव्य धारा के निर्गुण शाखा के प्रमुख कवि हैं इनका जन्म सन 1398 काशी में हुआ था और देहांत 1495 में हुआ था। कबीर ने विधिवत शिक्षा प्राप्त नहीं की थी; परंतु ये स्वयं को रामानंद के शिष्य मानते थे। कबीर ने तत्कालीन कर्मकांडो, बाह्य आडंबरो, मूर्ति पूजा आदि का खुलकर विरोध किया था साथ ही उन्होंने जाति प्रथा, सांप्रदायिकता तथा धार्मिक कुरीतियों की भी डटकर आलोचना की। कबीर की भाषा में अरबी, फारसी, अवधी, ब्रज, राजस्थानी, पंजाबी, जैसी अनेक भाषाओं के शब्दों का मिश्रण है। इसीलिए इनकी भाषा को साधु कड़ी पंचमेल खिचड़ी भाषा भी कहा जाता है।

दोहों का सार: हिंदी साहित्य के इतिहास में निर्गुण भक्ति धारा के अंतर्गत ज्ञान मार्ग के प्रमुख कवि कबीर दास जी समाज की प्रचलित बुराइयों को अपनी शिक्षा द्वारा दूर करने का प्रयास करते रहे। कबीरदास के इन पदों में गुरु की महिमा, ईश्वर भक्ति की प्रशंसा, माया से बचने का परामर्श, कर्म से ईश्वर की भक्ति, कर्म से बड़प्पन पाने आदि के मूल मंत्र अभिव्यक्त हुए हैं। कबीर दास जी ने गुरु का स्थान ईश्वर से बड़ा बताया है, जहां ईश्वर तक पहुंचने का मार्ग स्पष्ट दिखाई देने लगा। जब ईश्वर प्रेम का बादल हमारे ऊपर बरस गया तब यह मन अंदर तक भीग गया और आत्मा आनंदित हो गई अर्थात पहले वे वेद मार्ग के अनुयायी थे फिर सतगुरु से मिलने के बाद वेद की मान्यताओं को छोड़ दिया। जो व्यक्ति भगवान से बिछड़ जाता है उसे कभी सुख प्राप्त नहीं होता क्योंकि यह आत्मा तो केवल परमात्मा के लिए ही तड़पती रहती है। ईश्वर से एकमात्र निवेदन है कि हे नाथ, मेरी मृत्यु के बाद मुझसे मिलने मत आना मैं जीवित रहकर तुम्हारा सहयोग चाहता हूं राम अर्थात ईश्वर के आगमन की राह देखते-देखते वे व्याकुल हो उठे, दृष्टि मंद पड़ गई है राम को पुकारते पुकारते जीभ में छाले पड़ गए। सांसारिक सुख से आनंद लेने से आध्यात्मिक मार्ग से लोग अलग हो जाते हैं। मन तो चिंता में घूमता रहता है। जिस प्रकार घुन अंदर ही अंदर लकड़ी को खा जाती है ठीक उसी प्रकार राम के दर्शन के बिना चिंता मुझे खाए जाती है। रात दिन परमात्मा से मिलने लिए रोते रोते उनकी आंखें कमजोर हो गई हैं पर उस जीवनदायिनी औषधि को नहीं पा सके अर्थात मनुष्य का माया से मुक्ति पाना (सांसारिक बंधन) बहुत कठिन है। मनुष्य को संसार में अनेक रूप और आकर्षण दिखाई देते हैं, संसार की विविधता की तरफ आकर्षित भी हुए परंतु कबीर को सतगुरु मिल जाते हैं और उनका मन सफल हो जाता है। कबीर कहते हैं कि मनुष्य को अपने जीवन पर घमंड नहीं करना चाहिए। जब तक अहम का भाव रहेगा तब ईश्वर मुझसे दूर ही रहेंगे। जब भगवान मिल जाते हैं तो अहम का भाव अपने आप मिट जाता ठीक उसी प्रकार जैसे कि जब हम दीपक के माध्यम से देखते हैं तो वहां फैला सारा अंधकार

मिट जाता है। यहां अपने जीवन में दीपक कौन है?-- गुरु, जिन्होंने ज्ञान से अज्ञानता के अंधकार को मिटा दिया। आते हमारे दैनंदिन जीवन की सच्चाई यही है-- संसार, माया, मोह, गेरुआ वस्त्र पहनना, तिलक छापा, हाथ में माला लेकर योगी बनना निरर्थक है। यदि कोई मन से योगी हो जाए तो उसकी साधना फलीभूत होती है और वह ईश्वर में हो जाता है।

कठिन शब्दों के अर्थ

बरष्या - बरसा
अंतरि - अन्दर का
बासुरि - दिन
रैणि - रात
मूवां पीछे - मरने के बाद
जिनि - मत
अंखड़ियां झाईं - आंखों में जाला पड़ना
रिसाइ - नाराज हो जाएंगे
बिसूरणां - चिंता करना
फिरया - घूमता रहा
गंवाये - खो देना
बूटी - औषधीय गुण वाली वनस्पति
देषण - देखने
नजरि - दृष्टि
अनूप - अनुपम ब्रह्म
मैं - अहंकार
विरला - दुर्लभ
सहजै - आसानी से

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें :

1) पठित पाठ के आधार पर बताइए कि कबीर के काव्य का क्या विषय था? उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से क्या संदेश दिया है?

2) निम्नलिखित दोहों के आधार पर दिए गए प्रश्नों का संक्षेप में उत्तर दीजिए -

क) बांसुरि सुख, नां रैणि सुख,ना सुख सुपिनै माहिं।
कबीर बिछुट्या राम सूं, ना सुख धूप न छांह।।

मूवां पीछे जिनि मिलै, कहै कबीरा राम।
पाथर घाटा लौह सब,(तब) पारस कोणे काम।।

i) मनुष्य सुख भोग कब नहीं कर पाते हैं?
ii) राम कौन है? उनसे बिछड़ने से क्या होता है?
iii) पारस पाथर का मतलब क्या है? कवि ने इस पत्थर से क्या संकेत करना चाहा है?
iv) शब्दार्थ लिखिए - मूवां, पीछे, जिनि, बांसुरि, रैणि, बिछुट्या।

ख) जब मैं था तब हरि नहिं,अब हरि हैं मैं नाहिं।
सब अंधियारा मिटि गया,जब दीपक देख्या माहिं।।

तन कौं जोगी सब करैं,मन कौं विरला कोई।
सब विधि सहजै पाइए,जे मन जोगी होइ।।

i) मनुष्य कब ईश्वरमय हो जाता है?
ii) दोहे के आधार पर बताइए कि यहां दीपक का उल्लेख क्यों किया गया है?
III) बाहरी दिखावे से कवि को नफरत क्यों था?
iv) शब्दार्थ लिखिए - विरला, मैं, हरि, जोगी,सहजै।